प्रख्यापन

"गोविंद मिश्र के 'पाँच आँगनों वाला घर' का अनुशीलन" लघु शोध-प्रबंध मेरी मौलिक रचना है, जो शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर की **एम्.फिल. (हिंदी)** उपाधि के लिए प्रस्तुत की जा रही है । यह रचना इससे पहले इस विश्वविद्यालय या अन्य किसी विश्वविद्यालय की किसी भी उपाधि के लिए प्रस्तुत नहीं की गई है ।

शोध-छात्रा

Awate

(सौ. मीनाक्षी भास्कर आवटे)

स्थान - कोल्हापुर

तिथि - 29 JUN 2007

गोविन्द मिश्र

जन्म :- 1 अगस्त 1939

प्राक्कथन

प्राक्कथन

गोविंद मिश्र जी हिंदी साहित्य जगत् के जाने-माने साहित्यकार हैं। एक बहुत बड़े पद पर आसीन होने के बावजूद और उस कार्य में व्यस्त रहने पर भी उन्होंने कई सर्वश्रेष्ठ कृतियों का निर्माण किया है। हिंदी साहित्य जगत् के लिए उनकी और उनके साहित्य की देन हिंदी भाषा को ही नहीं बल्कि हिंदी साहित्य को भी सबसे उच्च स्तर पर ले जाती है।

समाज की सभी तरह की विवंचनाओं को, वास्तविकता को और भारतीय समाज की समस्याओं को, सभी वर्गों की जीवनगाथाओं को भी उन्होंने अत्यंत मार्मिकता से प्रकट किया है। इसी कारण उनकी साहित्य कृति एक अलग अंदाज से पाठकों के सामने आती है। लिखने का एक अलग अंदाज यह उनकी खासियत है। उनकी सृजनशीलता, चिंतनशीलता, अनुभूति, प्रतिभा उनके साहित्य में प्रकट होती है।

मिश्र जी ने मानवी जीवन को सिर्फ कल्पना में ही नहीं बाँधा बल्कि वास्तविकता को भी खूबी से लिया है। ऐसा लगता है जैसे हमारे अपने जीवन में ही यह घटित हो रहा हो। उनके साहित्य की कई घटनाओं को हम हमारे जीवन के साथ जोड़ने लगते हैं तो हमें यह एहसास होने लगता है जैसे हमारे अपने परिवार की यह कहानी हो। मिश्र जी का साहित्य मानवी जीवन का सच्चा प्रतिबिंब है। सुसंस्कृत और संस्कारशील परिवार से होकर भी मिश्र जी आम आदमी के जीवन से वाकिब है। पीछड़े समाज में रहनेवाले सभी तरह के लोगों का मानसिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, आर्थिक और चारित्रिक चित्रण भी उन्होंने अत्यंत सूक्ष्मता से किया है।

गोविंद मिश्र जी का 'पाँच आँगनों वाला घर' यह उपन्यास आधुनिक काल में प्रकाशित हुआ और सबसे अधिक प्रसिद्धि पाया उपन्यास है। हिंदी उपन्यास साहित्य जगत् में थोड़ा हटकर है जो एक अलग अंदाज में लिखा गया है। मिश्र जी लिखित यह एक बेजोड़ कलाकृति है जिसमें चित्रात्मकता, भावात्मकता, आँचलिकता, संवेदनशीलता, सामाजिकता, राष्ट्रियता और प्रासंगिकता नजर आती है। इस उपन्यास में उन्होंने मनुष्य समाज की पारिवारिक आस्था, अनास्था, विदेशी आकर्षण, स्वतंत्र विचारशैली के कारण पारिवारिक जिम्मेदारियों के प्रति दुर्लक्षित नई पीढ़ी आदि बातों की ओर सूक्ष्मता से ध्यान दिया है। आदर्श और यथार्थ के साथ-साथ प्राकृतिक चित्रण और लोकभाषा को भी

उन्होंने अलग अंदाज में पेश किया है। मिश्र जी के 'पाँच आँगनों वाला घर' उपन्यास में प्रसंगानुकूल कथानक का विस्तार होता नजर आता है।

'पाँच आँगनों वाला घर' इस उपन्यास का कथानक वास्तविक है और इसकी प्रेरणा उन्हें एम्.ए. के सहपाठी से मिली है जो अभी भी उनके मित्र हैं। 'पाँच आँगनों वाला घर' यह जैसे उनके अपने जीवन का आँखों देखा हाल है और उन्होंने स्वयं उन सारी घटनाओं की अनुभूति ली है और उसे हू-ब-हू चित्रित किया है। इस उपन्यास में 1940 से लेकर 1990 तक के पारिवारिक जीवन के दिनक्रम, तौर-तरीके, खान-पान, एक दूसरे के प्रति हर नई पीढ़ी का व्यवहार आदि पारिवारिक बातों का अत्यंत कुशलता से चित्रण किया है।

विषय चयन :

गुरूवर्य डॉ. अर्जुन चव्हाण और डॉ. आशा मणियार जी के साथ विचार-विमर्श करने के पश्चात् इस उपन्यास पर संशोधन करने की सोच ली। मिश्र जी के मौलिक विचारों से और उनके द्वारा लिखित 'पाँच आँगनों वाला घर' से प्रभावित होकर इस उपन्यास पर संशोधन करने की इच्छा हुई। गोविंद मिश्र जी को मैंने महावीर महाविद्यालय में सुना था। उनके विचारों को सुनने से मुझे वे अन्य साहित्यकारों से बिल्कुल हटकर लगे हैं। उनके अंदर की गहरी संवेदना और उनका चिंतन देखकर मैं अचंबित हो गयी। मन को छू लेने वाले उनके विचारों ने मुझे सोचना सिखाया। उनके ही शब्दों में "लिखना मेरे लिए अत्यंत जरूरी था। यह मेरी जरूरत थी। जीवन के बारे में सोचना शुरू किया तो लिखना अपने आप आ गया। मन के अंदर के स्पंदन जब बड़ी उत्साह के साथ उमड़ आते हैं तो अपने आप लिखा जाता है। अगर मैं नहीं लिखता तो कब का मर जाता। पहले प्रेम के मोहभंग ने लिखवाया।" मिश्र जी के इन्हीं विचारों ने मुझे झंझोड़कर रख दिया। कितनी सच्चाई है उनके विचारों में !! जिसे कहने के लिए वे जरा भी हिचकिचाते नहीं !!!

शोध कार्य :

"मिश्र जी के साहित्य पर जो शोध कार्य हुए हैं वे इस प्रकार हैं -

एम्.फिल्. 1) "गोविंद मिश्र के उपन्यासों में चित्रित समाज जीवन"

कु. मनिषा बाळासाहेब जाधव (शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर)

2) ''गोविंद मिश्र का उपन्यास 'लाल पीली जमीन' एक अनुशीलन''
प्रा. मायाप्पा आक्काप्पा यल्लुरे (शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर; अप्रैल 1997)

3) ''गोविंद मिश्र की कहानियों में सामाजिकता''
इंद्रजित राठौर (पूना विश्वविद्यालय, पूना; सन् 1985)

4) ''गोविंद मिश्र के साहित्य का समीक्षात्मक अध्ययन''
के.पी. शाह।

गोविंद मिश्र पर हुए आज तक के शोध कार्य की ओर देखने से यह बात स्पष्ट होती है कि 'पाँच आँगनों वाला घर' इस उपन्यास पर स्वतंत्र रूप में कार्य नहीं हुआ है। इसी कारण इस उपन्यास का अनुशीलन करने की इच्छा मेरे मन में निर्माण हुई। 'पाँच आँगनों वाला घर' यह मिश्र जी का आधुनिक काल में प्रकाशित नया संस्करण है और इसमें एकल परिवार का ऐतिहासिक चित्रण किया हुआ है। 1940 से लेकर 1990 तक का तकरीबन तीन पीढ़ियों का चित्रण इसमें किया है जो सिर्फ सजीव ही नहीं लगता बल्कि वास्तविकता और यथार्थता की कसौटी पर खरा उतरता है, जिसे पढ़ने में शुरू-शुरू में तो पेचिदगी लगती है किंतु जैसे-जैसे उसमें मन रमने लगता है वैसे-वैसे पढ़ते समय ऐसा लगता है जैसे हम अपने परिवार से ही गुजर रहे हैं।

'पाँच आँगनों वाला घर' यह उपन्यास देखने में छोटा दिखाई देता है फिर भी इसमें तीन पीढ़ियों का जो ऐतिहासिक चित्रण किया हुआ है उसे देखकर यह महाकाव्यात्मक उपन्यास है ऐसा कहेंगे तो गलत नहीं होगा। इसमें कई छोटी-छोटी कथाएँ हैं और पात्रों का अधिक्य भी है। हर पीढ़ियों के बदलते परिवेश की बदलती स्थितियों का और उस वक्त के समाज का चित्रण मिश्र जी ने सहजता से किया है। 'पाँच आँगनों वाला घर' इस उपन्यास का अनुशीलन तो अभी तक नहीं हुआ है किंतु इस उपन्यास को प्रेमशंकर जी ने 'मोहभंग का दारूण दस्तावेज' ऐसा कहा है। डॉ. प्रेमशंकर जी के शब्दों में '''पाँच आँगनों वाला घर' यह मिश्र जी का नवीनतम उपन्यास है जहाँ एक लंबे कालखंड की कथा को लिया गया है। कथा स्वतंत्रता संघर्ष से प्रारम्भ होकर 1990 तक आती है जिसमें मोहभंग का स्वर प्रमुख है। 'पाँच आँगनों वाला घर' अपने शीर्षक से ही टूटते सम्मिलित

परिवार-व्यवस्था का बोध कराता है जो नए सामाजिक दबावों की एक अनिवार्य परिणति है। मोहभंग की दो दारूण स्थितियाँ हैं - व्यक्ति और समाज।''

डॉ. प्रेमशंकर जी 'पाँच आँगनों वाला घर' इस उपन्यास की समीक्षा करते हुए मिश्र जी के प्रति यह भावना व्यक्त करते हैं - ''कथाकार गोविंद मिश्र एक सजग सचेत नागरिक की तरह देश की पीड़ा महसूस करते हैं और मोहभंग की दारूण परिणति तक पहुँचाते हैं।''

मिश्र जी लिखित 'पाँच आँगनों वाला घर' इस उपन्यास को पढ़ने के बाद मेरे मन में जो प्रश्न उपस्थित हुए हैं उसे मैंने गोविंद मिश्र जी से पत्रव्यवहार करके इन प्रश्नों को हल करने का प्रयास किया है। इस उपन्यास संबंधित मेरे मन में जो प्रश्न उठें वे इस प्रकार थें -

1) 'पाँच आँगनों वाला घर' यह उपन्यास लिखने की प्रेरणा मिश्र जी को कैसे मिली?
2) 'पाँच आँगनों वाला घर' की संरचना कैसी रही होगी?
3) क्या खुद मिश्र जी ने उस पाँच आँगनों वाले घर में अपना जीवन बिताया है?
4) क्या मिश्र जी इस उपन्यास के किसी पात्र के रूप में दिखाई देते हैं?
5) मिश्र जी स्वयं को इस उपन्यास के कौन-से पात्र से जोड़ते हैं?
6) 'पाँच आँगनों वाला घर' यह काल्पनिक है या वास्तविक?
7) 'पाँच आँगनों वाला घर' यह शीर्षक क्यूँ दिया है?
8) इस उपन्यास के कालखंड में 10 वर्ष का अंतराल किसलिए रखा हुआ है?

इस तरह के प्रश्नों को सुलझाने के उद्‌देश्य से इस उपन्यास का अनुशीलन करने की मैंने मन में ठान ली।

'पाँच आँगनों वाला घर' इस उपन्यास संबंधी डॉ. उर्मिला शिरीष के विचार उनके शब्दों में - 'पाँच आँगनों वाला घर' अब तक प्रकाशित उनका अंतिम उपन्यास है। ''1940 से 1990 तक पचास वर्षों के भारत की पृष्ठभूमि में रखे गए यह उपन्यास परिवार की तीन पीढ़ियों की कथा कहता है। भारतीय समाज में मूल्यों के विघटन को उपन्यासकार ने परिवार में आए बदलाव के माध्यम से दर्शाया है।''

'पाँच आँगनों वाला घर' इस उपन्यास के संबंध में मुंबई विश्वविद्‌यालय के

अध्यक्ष और आलोचक डॉ. रामजी तिवारी का कथन इस प्रकार है - "हिन्दी में ऐसा कोई उपन्यास मेरे देखने में नहीं आया जिसमें राजनीतिक घटनाओं को बाकायदे नाम लेकर स्पष्टता और यथातथ्यता से प्रस्तुत किया गया हो और एक सधे हुए संयम के साथ-साथ उन्हें हमारे सामाजिक पतन के साथ जोड़ा गया हो। निर्भिकता की यह विशिष्टता इस उपन्यास को एक अलग ही पोत में खड़ा करती है। अंतत: पाठक केवल अभिभूत ही नहीं होता, अपितु राजनैतिक भ्रष्टता, सांस्कृतिक ऱ्हास और मानवीय पतन के बीच छटपटाती नैतिकता और मूल्य निष्ठा के प्रति सचेतन और आस्थावान भी बनता है। इस प्रकार यह उपन्यास बहुत बड़े सामाजिक दायित्व की पूर्ति करता है।"

'पाँच आँगनों वाला घर' इस उपन्यास को 1998 का प्रतिष्ठित 'व्यास' सम्मान भी दिया गया है।

'पाँच आँगनों वाला घर' यह उपन्यास सचमुच एक अलग अंदाज से लिखा गया उपन्यास है। आज तक उपन्यास को उपन्यासों के तत्त्वों में ढालकर लिखा जाता था किंतु यह उपन्यास अपने आप बनता गया। उसमें जो सच्चाई है, वह जीवन की वास्तविकता को दस्तावेज बनाकर प्रकट करानेवाली है।

मैंने इस उपन्यास का सभी दृष्टि से चिंतन और मनन करने के लिए सुविधा हो इसी कारण इसे पाँच अध्यायों में विभाजित किया है। अध्ययन के उपरांत मेरे सवालों के जो भी उत्तर मुझे प्राप्त हुए हैं उन्हें उपसंहार में अनुसंधान की उपलब्धियों के लिए लिखा गया है।

'पाँच आँगनों वाला घर' इस उपन्यास का अनुशीलन पाँच अध्यायों में किया है।

प्रथम अध्याय : 'गोविंद मिश्र का व्यक्तित्व एवं कृतित्व' :

प्रथम अध्याय में मिश्र जी के व्यक्तित्व संबंधित जानकारी दी है। मिश्र जी का जन्म क्षेत्र, उनके माता-पिता, वंश, शिक्षा, विवाह और संतान। पहले प्रेम की असफलता यह उनके व्यक्तित्व का सबसे महत्त्वपूर्ण पहलू है। क्योंकि पहले प्रेम के मोहभंग ने ही उन्हें लिखने के लिए मजबूर कर दिया। दिल के टूटने के बाद संवेदनशील व्यक्ति को कागज और कलम का बहुत बड़ा सहारा मिलता है। इसी सहारे ने मिश्र जी को लिखवाया। वे लिखते गए और आज भी लिख रहे हैं। शुरुआत की प्रेरणा चाहे कही से भी प्राप्त हो

गयी हो किंतु साहित्यिक रूची के कारण उन्होंने मन में उमड़नेवाले विचारों को अपने तक ही नहीं रखा है बल्कि सभी तरह से उसे मुक्त कर दिया है। वे जीवन की अनुभूति को खोलते गए हैं। उनके हाथों मौलिक साहित्य कृतियों का निर्माण हुआ है।

मिश्र जी ने अपनी पढ़ाई पूरी करने के बाद अध्यापन और राज-सेवा अधिकारी के स्थान पर अपना कर्तव्य निभाया। अपने पद पर व्यस्त रहने के बावजूद भी उन्होंने कई श्रेष्ठ साहित्यकृतियों का निर्माण किया है। अपने जीवन काल में उन्हें अपने दो संतान की मृत्यु ने हिला दिया तथा इस तरह के दु:खद प्रसंगों से उन्हें गुजरना पड़ा है। आज भी वह साहित्य निर्माण में व्यस्त है। उनका व्यक्तित्व बहुगुणों से युक्त व्यक्तित्व है।

द्वितीय अध्याय : 'पाँच आँगनों वाला घर का वस्तुगत अनुशीलन' :

दूसरे अध्याय में 'पाँच आँगनों वाला घर' का वस्तुगत अनुशीलन किया है। वस्तुगत से तात्पर्य है 'वस्तुनिष्ठ कथागत' अथवा 'कथावस्तु'। कथावस्तु का अर्थ वस्तु-विन्यास की तहत किया जाता है। कथावस्तु शरीर में आत्मा के समान होती है। इसलिए उपन्यास में कथावस्तु को प्रथम स्थान दिया है। कथावस्तु संगठन मात्र न होकर घटनाओं के मध्य वह सूत्र है जो घटनाओं का सुव्यवस्थित संयोजन करके औपन्यासिक सृष्टि का मूल आधार बनता है।

उपन्यास में कथावस्तु का महतत्त्व अधिक रहता है। इसलिए इस उपन्यास का कथावस्तु की दृष्टि से वस्तुगत विवेचन उपन्यास के कथानक के अनुसार हो सकता है। अध्याय के अंत में निष्कर्ष दिया गया है।

तृतीय अध्याय : 'पाँच आँगनों वाला घर' का कथ्यगत अनुशीलन :

तृतीय अध्याय में इस उपन्यास का कथ्यगत अनुशीलन किया है। कथ्य लेखक की वैचारिक प्रगल्भता को बताता है। उपन्यास में कथ्य ही अहम भूमिका निभाता है। कथानक को कथित करना साहित्यकार की दृष्टि से एक महत्त्वपूर्ण कौशल्य है जिसमें सफलता प्राप्त कराने के लिए सामाजिक परिवेशों के साथ-साथ भावभंगिमा, संवेदनशीलता अनिवार्य है। जीवन का अंकन करते हुए उसके प्रति लेखक की अनुभूत जीवन दृष्टि की अभिव्यक्ति ही कथ्य है। नीजता से जन्मी अनुभूति के कारण उसकी विशिष्टता सामाजिक तथा वैयक्तिक संघर्षों से जुड़ी होने के कारण इसमें यथार्थ की खुली स्वीकृति व उस यथार्थ को नई दिशा देने का प्रयास रहता है।

कथ्य में संवाद तथा पात्रों के माध्यम से कथन करने से उपन्यास विकसित होने लगता है। कथ्य से उपन्यास का सौंदर्य और उसकी योग्यता को उच्च श्रेणी में लिया जाता है। अध्याय के अंत में निष्कर्ष दिया गया है।

चतुर्थ अध्याय : 'पाँच आँगनों वाला घर' का शिल्पगत अनुशीलन :

'पाँच आँगनों वाला घर' इस उपन्यास को शिल्पगत दृष्टि से उद्धृत करना आवश्यक लगता है। इस उपन्यास का शिल्प प्रस्तुत करने के लिए उपन्यास के तत्वानुसार उसे प्रयुक्त करना और उसका अनुशीलन करना अनिवार्य लगा। उपन्यास के शिल्पगत सौंदर्य को प्रतीत करने के लिए कथावस्तु, पात्र तथा चरित्र-चित्रण, देशकाल-वातावरण शैली तथा उद्देश्य आदि औपन्यासिक तत्त्वों के दायरे में उसे प्रस्तुत करने की आवश्यकता लगी। अध्याय के अंत में निष्कर्ष दिया है।

पंचम अध्याय : 'पाँच आँगनों वाला घर' में चित्रित समस्याएँ :

'पाँच आँगनों वाला घर' उपन्यास की समस्याओं को लिया गया है। उपन्यास की समस्या, उपन्यास के कथावस्तु की समस्या, पात्रों की समस्या तथा पारिवारिक, राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, मनोवैज्ञानिक आदि समस्याओं का चित्रण किया है। अध्याय के अंत में निष्कर्ष दिया है।

उपसंहार :

उपर्युक्त सभी अध्यायों के निष्कर्ष सारांश में उपसंहार में प्रस्तुत किए हैं। इसके उपरांत संदर्भ ग्रंथ सूची दी है। प्राक्कथन में उठाए गए सवालों के जवाब अनुसंधान की उपलब्धियों के रूप में प्रस्तुत किए हैं।

शोध-प्रबंध की मौलिकता :

मेरे शोध-प्रबंध की मौलिकता इस प्रकार है -

1) मिश्र जी लिखित 'पाँच आँगनों वाला घर' इस उपन्यास का अनुशीलन करते समय मिश्र जी के साथ पत्रव्यवहार करने को मिला, इसी कारण मुझे लिखने की नई प्रेरणा मिली।

2) मिश्र जी के उदात्त विचारों को और उनसे प्राप्त पत्रों को मैंने इस अध्याय के अंत में परिशिष्ट में समाविष्ट किया है।

3) इस अध्याय में मैंने उपन्यास के पात्रों की पीढ़ियों का विवरण दिया है।

4) पाँच आँगनों वाला घर इस उपन्यास में किए हुए वर्णनानुसार उसकी संरचना को निर्माण करने का प्रयास किया है।

5) इस उपन्यास के अनुशीलन के माध्यम से भारतीय परिवारों के घर की समस्या पर मैंने प्रकाश डाला है।

6) भारतीय जनमानस की बदलती मानसिकता ने मनुष्यता को खो दिया है। इसी बात पर अपने विचार व्यक्त किए हैं।

7) वर्तमान स्थिती में भी उपन्यास की प्रासंगिकता नजर आती है। भारतीय समाज पर पाश्चात्यों के प्रभाव के कारण पारिवारिक एकसंघता तहसनहस हो गयी है। आधुनिक समाज की पोल खोलने का प्रयास किया है।

8) भारतीय समाज में नैतिकता का ऱ्हास होता दिखाई दे रहा है। इसी कारण वर्तमान स्थिति में भी अनगिनत समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है।

9) संयुक्त परिवार को बनाये रखने के लिए युवा पीढ़ी को बुजुर्गों का सम्मान करने की आवश्यकता लग रही है।

10) संयुक्त परिवार की आत्मीयता से मनुष्यों पर सुसंस्कार स्थापित हो सकते हैं। खुशहाल जीवन बिताने के लिए अच्छे संस्कारों की जरूरत हैं।

11) इस उपन्यास की वास्तविकता उच्चतम कसौटी, इतिहास की पुनरावृत्ति, भारतीय समाज की पारिवारिक स्थिति आदि बातों की मौलिकता का विवेचन किया है।

12) इस उपन्यास की मौलिकता को बताने के लिए उपन्यास का सभी दृष्टि से अध्ययन, मनन और चिंतन करके उपन्यास के तत्वानुसार इसका महत्त्व प्रस्तुत किया है। यह मेरे शोध-प्रबंध की मौलिकता है।

ऋणनिर्देश

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबन्ध की पूर्ति में प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष रूप में मेरी सहायता करने वाले हितचिंतकों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापन करना मैं अपना कर्तव्य समझती हूँ। मैं उन सब की सदैव ऋणी रहूँगी जिन्होंने मेरे इस कार्य में अपना योगदान दिया है और हर समय पर मुझे प्रोत्साहित किया है। मैं उन सभी मार्गदर्शक और हितचिंतकों के प्रति अंत:करणपूर्वक आभार व्यक्त करती हूँ।

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबन्ध आदरणीय गुरूवर्या पण्डित **डॉ.आशा मणियार** के मार्गदर्शन में पूर्ण हुआ है। अपने कार्य में हमेशा व्यस्त रहते हुए भी आपने मुझे हर समय सही दिशा दिखायी। आपके परिवार से भी मुझे बहुत सहयोग मिला इसके लिए मैं आपकी ऋणी रहूँगी।

मेरे इस लघु शोध-प्रबन्ध को पूरा करने के लिए आदरणीय पूज्य गुरूवर्य **डॉ. अर्जुन चव्हाण जी** ने मेरी कठिन से कठिन समस्या का समाधान किया, समय-समय पर मुझे प्रोत्साहन दिया। उनके प्रति अपना साभार ऋण प्रकट करना मैं अपना कर्तव्य समझती हूँ।

हिंदी के जाने माने साहित्यकार और मेरे प्रिय लेखक **आदरणीय गोविन्द मिश्र जी** की मैं आजन्म ऋणी रहूँगी। अपने लेखन में सदैव व्यस्त रहते हुए भी आपने मुझे जो सहायता की है वह अनमोल है। लघु शोध-प्रबन्ध के लिए आवश्यक प्रश्नावली के उत्तर भेजकर मेरा पूर्णत: समाधान किया है।

मेरे माता-पिता के संस्कार और आशीर्वाद हमेशा मेरे साथ रहे हैं। मेरे लघु शोध-प्रबन्ध की पूर्ति के लिए सबसे बड़ी सहायता करने वाले मेरे पति **प्रा.श्री. भास्कर इ. आवटे** जिनके कारण ही मैं यहाँ तक पहुँच पायी हूँ। मेरी दो बेटियाँ **प्रज्ञा** और **प्रत्युषा** ने मुझे जो सहयोग दिया उसके कारण मैं इस लघु शोध-प्रबंध को पूरा कर पायी हूँ।

सौ. मनिषा कुलकर्णी, कु. रूपाली चव्हाण, कु. सुषमा नामे, कु. शैला गवली, वालचंद नागरगोजे, दिपक तुपे, कु. छाया माली आदि का सहयोग मेरे लिए महत्वपूर्ण रहा है। मेरे भाई-बहन और सगे सम्बन्धियों की शुभकामनाएँ मुझे मिली हैं। **शिवाजी विश्वविद्यालय** के **बालासाहेब खर्डेकर ग्रंथालय** की ओर से मुझे समय-समय पर कई मौलिक ग्रंथों की सहायता मिली है उनको भी मैं धन्यवाद देती हूँ।

मेरी सहायता करनेवाले सभी लोगों को धन्यवाद देती हूँ जिनकी शुभकामनाएँ मेरे साथ रही है। **सौ. सुमित्रा श. चौधरी, प्रा.सौ.एस्.के.पाटील, प्रा.श्री. एस्.एस्. चौगले, प्रा. सुनिता तलाशिकर, प्रा. निंबालकर मॅडम, प्रा.डॉ. आंतर्रेड्डी**, म.ह. शिंदे महाविद्यालय के सचिव **श्री. जे.जी. शिंदे** से सविनय आभार प्रकट करती हूँ।

इस लघु शोध प्रबन्ध को सुचारू रूप से पूर्ण करनेवाले **अक्षर टायपिंग** की संचालिका **सौ. पल्लवी सावंत** और **नवरंग प्रिंटींग प्रेस** के प्रति मैं हार्दिक कृतज्ञता प्रकट करती हूँ।

प्रबंध को यथाशक्ति परिपूर्ण बनाने का मैंने प्रयास किया है। इससे विद्वज्जनों को, बुद्धिवादियों को और पाठकों को बौद्धिक आनंद आए तो इसी में ही मैं अपने कार्य को सार्थक समझूँगी।

शोध-छात्रा

स्थान - कोल्हापुर

तिथि -

(सौ. मीनाक्षी भास्कर आवटे)